

5

D E K A

देवदलका

विषलक्षे

व. ८

5
word book
(the padma)

द्वाविंशतिपाठ

आतुरस्य = असौमदुहसि-या ॥ ओष
धम् = वास ॥ यव्य = फायदा ॥ १ ॥ निरोग
स्य = रोगमजुहसिया ॥ किमोषधः = कु-
वास ॥ २ ॥ यस्य = गुहसिया ॥ कीर्ति =
कीर्तिवु ॥ सः = व ॥ जिवति = म्वानाचनी
॥ ३ ॥ इदम् = ध्व ॥ अश्वभ्यं = जिमित ॥
नरोचेत = मयो ॥ ४ ॥ शीशवे = मवावले
॥ विदयो = विद्या ॥ उपार्जयेत् = सचकी ॥
॥ ५ ॥ परवसं = मेवयावसेच्यगु ॥
सर्व = फुक्क ॥ दुःखम् = दुःखहेख ॥ ६ ॥
आत्मवसे = थगुखुसिच्यगु ॥ सवि-
फुक्क ॥ सुखम् = सुखहेख ॥ ७ ॥

त्रयो विंशति ॥ पाठ

क्रोधः तंयात ॥ यत्नेन = जलं ॥ वर्जयेत् =
 तोति ॥ १ ॥ अहंकारः घमदु ॥ परित्यज्य
 = तोति ॥ २ ॥ संतोष मूर्खं सुखम् = सुख
 यामूलकारण संतोषखः ॥ ३ ॥ असंतोष
 मूलदुःखम् = दुःखयामूलकारण असं
 तोषखः ॥ ४ ॥ विद्वत्समो = इलमवरावर
 ॥ वक्षुः दाजुकिजा ॥ नास्ति = मदु ॥ ५ ॥
 यः = गुह्यं ॥ शोशवे = मचायावरते ॥ वि
 द्वा = विद्वत् ॥ उपार्जयति = सयकी ॥ ६ ॥
 सः = वं ॥ सुखेन = सुखे ॥ जिवनः जन्म
 यापयति = हनि ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

चतुर्विंशतिपाठ

यः = गुह्यं ॥ बाल्यः मचावले ॥ आलस्ये

न = अलासं जुया ॥ क्रीडया = लिता ॥
 कालम् = वरवत ॥ नातिवाहयति = विवे
 याई ॥ स = वं ॥ चिराय = ताकालंतक
 मूर्खी = मूर्ख ॥ भवति = जी ॥ १ ॥ यत्नेन
 जलं ॥ विद्वत्समः = इलमरूपीरत्न ॥ उ
 पार्जयेत् = सयकी ॥ विद्वत्समः = इलमरु
 पीरत्न ॥ महाधनः = तर्धगुधन ॥ दानेन =
 दानयानागुलि ॥ नक्षयति = कुनावनी
 मरु ॥ — १ — ॥ — १ — ॥ — १ — ॥

पंचविंशतिपाठ

बुद्धिर्यस्य = गुह्यसियाबुद्धिदु ॥ वलं
 तस्य = वयाहेवलदु ॥ निर्वुद्धिस्तु = बु
 धिमदुह्यसिया ॥ कुतोवलम् = गनवलदे

हीतं = उपकार (याइल) ॥ जीगु ॥ मरुगो
 द्वारिच = बौलागु ॥ दुर्लभ वच = वचन
 दुर्लभ ॥ कदापि = कबवे लसे ॥ तयो =
 उपिं निलसित ॥ अप्रीय = मन परे म
 जूगु ॥ मा कुरु = याय मत्य ॥ गुरु सेवा =
 गुरु यात चा करिया च गु ॥ परमो धर्म =
 त ध गु धर्म ख ॥ मातरि = माया के ॥ पि
 तरिच = बौवा या के ने ॥ भक्ति = सेवा ॥
 कुरु = या ॥ — ०५ — ॥ — ०६ — ॥

पंचमोऽध्याय

प्रथमपाठ

वृक् = गुं खिचा ॥ वरु = फा ॥ शुक र =
 = फा ॥ कोल = वने ल ॥ पराय = रास ॥

कुरु नामपन्न

कुशिद = व्याज ॥ सूद = व्याज ॥ वृत्ति =
 लजगा ॥ मार्ग = लं ॥ यठ = लं ॥ अर्ध =
 लं ॥ सम मार्ग = मिंगुलं ॥ विषम मार्ग =
 ममिगुलं ॥ सेतु = ताफू ॥ सेतु कन्ध = ताफू
 छुयगु ॥ मोक्ष = मुक्ति ॥ निर्वाण = मोक्ष
 ॥ जन्म = जन्म जीगु ॥ जनन = जन्म जी
 गु ॥ जाति = जन्म ॥ ब्रह्म = ब्रह्म ॥ क्षत्रिय
 = रये ॥ वैश्य = वैश्य ॥ सुद = सुद ॥ ॥

दुतीयपाठ

शाक वेस = साक कुल या अंस ॥ पिण्ड
 पान्न = गोया ॥ अर्धमे = अर्ध ॥ यादुम =
 लिचाय कगु ॥ आचमन = नस्कला
 कायगु ॥ आसन = केजीगु थां ॥ वज्र

६६
पर्याङ्क = वज्रासन ॥ गुप्तः = गुह्य ॥ प्र-
काश = उल्यगु ॥ आच्छादन = तोषीगु ॥
आकार = नक्सा ॥ आकृति = स्वरूप ॥
स्वभाव = वानि ॥ प्रत्यक्ष = मिखौरवन्द्यगु

तृतीयपाठ

परोक्ष = मिखौरवन्द्यगु ॥ इहम्न = धुगु
जन्म ॥ परत्र = लिपायागु जन्म ॥ यम =
जन्मराज ॥ कृतान्त = जन्मराज ॥ धर्म-
राज = जन्मराज ॥ यमराज = जन्मराज ॥
कल = जन्मराज ॥ कुराप = सीख ॥ मृत
क = सीख ॥ भोज्य = तयगु ॥ साधन =
हयगु ॥ सामग्री = ज्वले ॥ काय = सरीर ॥
वाक् = स्तुतु ॥ चित्त = मन ॥ प्रतिविंब =

६७
किपालु ॥ दर्पण = हेकं ॥ सम = वरोवर
॥ धर्म = धर्म ॥ श्रेयस् = धर्म ॥ सुकृत
= धर्म ॥ पुण्य = धर्म ॥ कुशल = धर्म ॥
चतुर्थपाठ

प्रीति = योगु ॥ प्रियतम = योह ॥ अ-
प्रिय = मयोह ॥ अप्रिती = मायामदु-
ह ॥ आनन्द = सुख ॥ कल्याण = कल्या-
ण ॥ मङ्गल = कल्याण ॥ शिव = कल्या-
ण ॥ भद्र = कल्याण ॥ कुशल = कल्या-
ण ॥ श्रेय = आनन्द ॥ भक्ति = सेवा ॥ भा-
वना = भावनायायगु ॥ ध्यान = ध्यान ॥
शमाधि = समाधि ॥ अपवर्ग = मोक्ष ॥
अपाय = नर्क ॥ निलय = नर्क ॥ दुर्गति =
नर्क ॥

पंचमपाठ

लाभः लब्धः ॥ सत्कारः मान्यः ॥ स्वाग
तः सत्कारवाचकशब्दः ॥ आदरः मा
न्यः ॥ यशः कीर्तिः ॥ वन्दनाः नमस्कार
यायगु ॥ पूजनः पूजायायगु ॥ देशनः
क्षमायापदेशनायायगु ॥ अनुमोदना
ः हर्षमानयायगु ॥ अधेक्षणाः ज्ञान
प्रत्ययगु ॥ याचनाः प्रार्थनायायगु ॥ प
रीक्षामना ॥ पुण्यतोत्यगु धर्मदानया
यगु ॥ जिवितः म्वायगु ॥ सर्वसत्त्वः
सकलप्राणिः ॥ भद्रवः उत्पत्तिज्यौगु
॥ उत्पत्तिः दयावैगु ॥ सिद्धिवाक्यः
स्यदुगुखं ॥ —०५— ॥ —०५— ॥

षष्ठमपाठ

सिद्धवाक्यः सिद्धवचनः ॥ पश्यः
स्वः ॥ मापश्यः स्वमत्यः ॥ बालुकाः
फिः ॥ सिकंताः फिगोचा ॥ वेशुः पं
॥ सरः तिः ॥ नडः हूपं ॥ एकहस्तः
कुद्धिः ॥ वितस्तिः कलाद्धिः ॥ एक
पाडः कलाद्धिः ॥ अञ्जलिः हाविति
यायगु ॥ पूर्वानुस्मृतिः पूर्वजन्मया
खेलुमनीशु ॥ जातिस्मरः पूर्वजन्म
याखेलुमनीशु ॥ भवः संसारः ॥ समू
तरणः तरेयायगु ॥ ॥ ॥ ॥

सप्तमपाठ

अलेकृतः छायापातलः ॥ जानामिः
स्युः ॥ नजानामिः मस्युः ॥ जानातिः सीडिः

जात्वा = लीका ॥ किं करोमि = छुयाय ॥
 कजच्छमि = जनवन् ॥ अत्र तिष्ठामि =
 धनचन्य ॥ त्वमपि अत्र तिष्ठः = छनै
 धनचै ॥ तत्र न तिष्ठ = आमकन चन्य
 मत्य ॥ अत्र तिष्ठः = धनचै ॥ कुत्र गच्छ
 ति = जनवन् मत्यना ॥ विकार = स्यनीगु ॥
 पदार्थ = बीज ॥ मास्पर्श = धीमत्य ॥ ॥

अष्टमपाठ

अपकार = अपराध ॥ सिद्ध = सिद्ध ॥
 समाप्तः = सिद्ध जुल ॥ आख्यात =
 धाल ॥ उक्तः = धाल ॥ प्रलपित = धा
 ल ॥ भणित = धाल ॥ आह = धाल ॥ उ
 वाच = धाल ॥ अवोचद् = धाल ॥ दत्त

वान् = विल ॥ गतवान् = वन ॥ कारि
 तवान् = यात ॥ मृदु = नाय ॥ कोमल
 = नायुगु ॥ कर्कश = काचु ॥ खर्व =
 काचु ॥ —०५— ॥ —०५— ॥

नवमपाठ

मृदुतेल = नायुचिकै ॥ तिलतेल = हा
 मोचिकै ॥ कुशुमेतेल = कुसुचिकै
 ॥ कस्तूर = कस्तूर ॥ मृगनाभि = कस्तू
 र ॥ मृगमद = कस्तूर ॥ श्रीखण्ड =
 श्रीखन्द ॥ कर्पूर = कपू ॥ सिंहा = सि
 हा ॥ अगुरु = अगुरु ॥ कृष्णागुरु =
 हाकृगु अगुरु ॥ रक्तचन्दन = रक्तचं
 दन ॥ सिल = सोल ॥ —०५— ॥

८८
दशमपाठ

मुस्ताः कसू ॥ मुहुलः मुग ॥ किल
= की ॥ कीलनः स्थायगु ॥ आकोटन
= तायगु ॥ छोटिका = पतिंचान्याय
क्यगु ॥ लिस्फोटनः पतिंचान्याय-
क्यगु ॥ व्यर्थः व्यर्थ ॥ अनर्थः व्यर्थ
॥ आरोहनः गयगु ॥ द्वयः धन ॥ द्व
वः नाइगु ॥ परिवेदनः विनाप ॥ वि
रीधः त्वापु ॥ —२५— ॥ —२५— ॥

एकादशपाठ

संकेतः इसरा ॥ शोषराः सुकेजीगु
॥ अग्निदाहः मिंपूगु ॥ अभिषेकः अ
धिकारया दुर्जा पावेजुगु ॥ दिक्षाः द्य-
खा ॥ मराडलः मराडल ॥ गोमयः साखि

८९
॥ गोमूत्रः च्व ॥ साच्व ॥ भेदः फरक
॥ स्तोत्रः तुत ॥ प्राणिधानः कल्पना ॥
कल्पनाः आशिका ॥ —२६— ॥

द्वादशपाठ

कर्तरीः कैचि ॥ कुठारः या ॥ परशुः
पा ॥ सैतोषिः सुखिल ॥ अस्वेतो
षिः दुःखिल ॥ दरिद्रः च्कगि ॥ नि
र्धनः च्कगि ॥ आद्यः तवमिल ॥
धनाढ्यः तवमिव ॥ विधः अनेक ॥
नानाविधः अनेक अनेक प्रकार
॥ नानाः अने अनेगु ॥ —२७— ॥

त्रयोदशपाठ

विना=तोता ॥ इदं=धुगु ॥ कौच=खा ॥ प्रतिवाक्य=जवाफ विअगु ॥ प्रश्नोत्तर=लिसवीगु ॥ ध्रुव=नित्य ॥ शाश्वत=नित्य ॥ स्थीर=नित्य ॥ अध्रुव=अनित्य ॥ अनुग=लुलुवेगु ॥ आधिपति=मालिक ॥ सत्वसत्र=प्राणि ॥ —२०५— ॥ —२०६— ॥

चतुर्दशपाठ

असृक्=हि ॥ पुरुष=मिज ॥ स्त्री=मिसा ॥ आराधन=आराधना यायगु ॥ उच्चारणम्=उच्चारण यायगु ॥ निश्चारयेत्=चलेयात् ॥ आराधयेत्=आराधनायात् ॥ दुर्मति=मभिगुमति

॥ दुर्बुद्धि=कुबुद्धि ॥ कुबुद्धि=मभिगु बुद्धि ॥ कुअन्न=मभिगु अन्न ॥ ॥

पंचदशपाठ

अश्वत्थ=वंगलसिमा ॥ पिप्पल=पिलासिमा ॥ बोधिद्रुम=वंगलसिमा ॥ बोधिवृक्ष=वंगलसिमा ॥ प्रक्ष=पिलासिमा ॥ वट=वर्मा ॥ कण्टक=कं ॥ युद्ध=लडाभी ॥ धनुक=धनुका ॥ संग्राम=लडाभी ॥ रण=लडाभी ॥ वारा=कान ॥ मोदक=लड्ड ॥ वागु=जाति

षोडशपाठ

वर्तुल=चाकलागु ॥ मधु=कस्ति ॥ इक्षु=कस्ति ॥ काश्चरा=लुं ॥ कि-

मिदं = ध्वजु॥ शृणु = श्रवणं॥ वार्ता शृणु
= श्रवणं॥ मान = गुमान॥ दर्प = स्पर्श
विगत = मंदैशु॥ आशित = जुल॥ वभुव
= जुल॥ अभुत = जुल॥ शृणोति = श्रवणं
॥ न शृणोति = न श्रवणं॥ - २०५ -

सप्तम पाठ

कमलम् = पल्लवम्॥ घटः = धऽप॥
छलम् = कपत॥ खरः = गडा॥ रुषः =
न्या॥ दुशनम् = वा॥ यवः = धू॥ रजत-
म् = ओह॥ लवणम् = चि॥ वदनम् =
स्थो॥ शकलम् = टुका॥ षड् पदः
भमा॥ छाया = किच॥ धाता = पालना
याइल॥ पादपः = सिमा॥ यातना =

दुःख॥ साधारणः = मामुलि॥ ३३॥

अष्टादश पाठ

किरणः = तेज॥ खिन्नम् = दुःख॥ कि-
न्नम् = हो॥ दिग्भः = बालक॥ तिमीरम्
= खैगु॥ दिनमणिः = सूर्य॥ धीष-
णः = बृहस्पति॥ लिखीतम् = चयात
गु॥ कीटः = की॥ जीवः = जिवात्मा॥ वि-
रसः = रसमदुगु॥ पियूसम् = अमृत॥
लिला = खेल॥ हीनम् = नीचा॥ - २०६ -

उत्तरविंशति पाठ

कुलम् = कुल॥ खुरः = खो॥ चुलिः = भू-
तु॥ छुरिका = चिमिका॥ जुहुः = चिमि-
चा॥ तुला = तरुण॥ पुमान् = मिज॥

(जु) फुलाम = होगु ॥ मुल्कम् = फीस ॥ हुता
 सनाम् = मिं ॥ युका = सिं ॥ रुक्षम् = सिमा ॥ लु
 ता = माकं ना ॥ मुर = वाहादुर ॥ मुद = जायुसु
 वा ॥ कुस = गंस्ति ॥ तृणम् = घाँ ॥ घृण = नेज्य
 मनाम् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

विंशतिपाठ

बृहत् = तधंगु ॥ भृङ्ग = भ्रमो ॥ बृषः
 = दोह ॥ सृष्टि = रचना ॥ मातृगाम् =
 मायागु भृगा ॥ पितृगाम् = अबूयागु
 भृगा ॥ कुपम् = दर्यकातेगु ॥ गियः
 गाना ॥ चेतन = आत्मा ॥ जेमवमन
 म् = ज्योना ॥ तेजस्वी = तेजदुस्त्र ॥ धे
 नु = सा ॥ नेता = नायो ॥ पेशाल = ६

तु ॥ रेखा = धो ॥ — २०५ — ॥

एकविंशतिपाठ

शेष = बाकि ॥ सेतु = ताफू ॥ कैतव
 म् = जु ॥ जेभ्र = त्याकस्त्र ॥ नैपुण्यम्
 = चलोखि ॥ सैन्धवम् = चि ॥ गो
 चर = सांरुगुथों ॥ घोषणा = नाखि
 च्चेक्यगु ॥ चाडना = उपदेश ॥ ता
 यम् = लः ॥ नोचेत = नत्र ॥ घात =
 जहाज ॥ बोध = जान ॥ मोदु = हर्ष ॥
 योषा = मिसा ॥ — २०६ — ॥

द्वाविंशतिपाठ

लोह = नै ॥ बोटा = कुकुवीस्त्र ॥ सोक
 = संताप ॥ सोपानम् = स्त्रोन्प ॥ होम

कोपीनम् = काप दुका ॥ दो वारिक
= दो कापाल्या ॥ नौका = दुंगा ॥ सैर-
व = नरक ॥ सौरभम् = कसर ॥ अं
स = भाग ॥ —०२— ॥ —०२— ॥

त्रयोविंशतिपाठ

अधपानम् = के छां वनिगु ॥ वाक्यम् = खं ॥ सो
रथम् = सुरव ॥ भाग्यम् = भाग्य ॥ राज्यम् = राज्या
क्षयम् = क्षयमाधाय जोग्य ॥ सह्यम् = सह्याय
जोग्य ॥ पक्षम् = पाके जुगु ॥ भवमेयम् = कुसल ॥
गहर = गुफा ॥ भजनम् = स्तौगु ॥ रत्न = जवाहार ॥ ॐ ॥

चतुर्विंशतिपाठ

ज्ञानम् = स्तूगु ॥ अंत्यम् = लिपा यागु
गशब्द = पद ॥ मसिभाजनम् = म-

स्थल ॥ कर्गलम् = भव ॥ नगरम्
= शहर ॥ देश = देश ॥ पूरं = सहृ ॥
ग्राम = गाँ ॥ दृढ विजम् = अमासि
॥ महान् = तर्धगु ॥ लघु = चिकिधं
गु ॥ सुन्दरम् = बाँ लागु ॥ कुरूप =
बाँ मलासि ॥ मिश्रीत = स्वाक ज्यागु

पंचविंशति

दुन्दील = भवरिवाल ॥ ज्यष्ठ = थकालि
॥ करिगुष्ठ = ककालि ॥ कृपण = कर्मि
॥ पुरानम् = पुरांगु ॥ नीबिनम् = हूगु ॥
भितः = ग्या ॥ यातयामम् = वारिगु
॥ पर्युसितम् = ध्वगीगु ॥ उब्दीष्टम्
= चिपोगु ॥ अपवित्रम् = कोहरगु ॥

अमेध्यम् = फोहरगु ॥ पवीत्र = चा
खागु ॥ मेध्यम् = चखागु ॥ — २०५ — ॥

षष्ठमाऽध्याय

प्रथमपाठ

कठोर = छागु ॥ कौमलम् = व्यातूगु
॥ मृदु = नायूगु ॥ ग्रामीण = गामो
॥ नागारिक = सहरिया ॥ अल्पमूल्य
म् = दुंगु ॥ बहुमूल्यम् = धिकेगु ॥
दूरम् = तापा ॥ समीपम् = सत्तिक
भू = ज्वीगु ॥ दृशिर = स्वेगु ॥ गम् =
वन्यगु ॥ चूष = त्वन्यगु ॥ धावु = धा
वन्यगु ॥ स्मृ = लुमंक्यगु ॥ नम् = न
मस्कार यायगु ॥ — २०६ — ॥

द्वितीयपाठ

प्रति दिनम् = दिनस्य ॥ रुक् =
छल ॥ मृग = चला ॥ समेष्यति
= वेगुदु ॥ १ ॥ त्वया = छ ॥ यथा
शक्ति = फयोफछि ॥ देयम् = बी
यमा ॥ २ ॥ यथा ज्ञान = स्पृगुतक
॥ करवाणि = या ॥ ३ ॥ मायादेवी
सुत = मायादेवीयाकाय ॥ तपा
वनम् = तपोवन ॥ जगाम = वन ॥
॥ ४ ॥ अहो = अहो ॥ कथं = गथ्य
॥ कृपेऽपतितोऽसि = तुयिकुतु
वनो चन ॥ ५ ॥ शिक्षक = आख
स्पनील # गुरु ॥ पितृसम = अ
बुवरोवुर खः ॥ — २०६ — ॥

२४
तृतीयपाठ

विद्याहीनस्यः इलममदुल्लसि
या॥ जिवनमः म्वानाच्चत्यगु॥
वृथाः = व्यर्थ हेखः॥ सुरक्षितं =
बालाक विचारयानातयागुजसां
तवि॥ देवहतं = भाग्यं प्कृत धाल
सा॥ विनस्यिः फुनावनी॥ २॥
धनलोभः धनयागुलोभ॥ निन्द
नीयः निन्दायाय जाग्य॥ ३॥ असौ
= स्वस्योल॥ विदेशागताः विदेशं
विज्याल॥ महापुरुषः तर्धेन पुरु
षखः॥ — २०५ — ॥ — २०५ — ॥

~~अथ~~
शीप्ते = ताप लायावखते॥

२५
चतुर्थपाठ

शीप्ते = ताप लायावखते॥ कुपोत्कं = तुं
यागुलेख॥ सितलं भवति = रद्याहस्य ज्वनि॥
५॥ असौ = च्व॥ शुभा = त्या यमपुरुष॥ सास्त्र
प्रविन = सास्त्र समग्र॥ २॥ क धमसौ = गच्छ
च्व॥ तिर्षकाकद्व = तिर्षेचोल कोये॥ लो
जो दुस्वते = चञ्चल खनेकु॥ सरसि = पुरुषलि॥
निलोत्पल = ओ बुगुपलेस्वां॥ सोभजे = सो
भा खनेकु॥ — २०५ — ॥ — २०५ — ॥

पञ्चमपाठ

अयं = च्व॥ पुरुषसिंह = पुरुषमध्ये
उत्तमलखः॥ अथ एकदा = धनंलि
छरुयादिने॥ कुमार सर्वार्थ सिद्ध =
कुमार सर्वार्थ सिद्ध॥ राज भवनात् =

राजमहल ॥ निरुक्ताम = पहाविजा
त ॥ २॥ सुप्तो थोट = द्युणादनालि
सयाय्या = लासा ॥ उपबिहानि = व्योम
पञ्चगवध्वरा = न्याहसाराय्योने
त्रिलोक = त्रिगुभुवरा ॥ ॐ ॥

षष्ठमपाठ

त्रिभूवन = स्वर्गभूवन ॥ दीर्घबाहुयुरु
ष = लाताः लमनू ॥ अयं महामतिः
ध्वसाप बुद्धिमानहो रवः ॥ स्थीरबुद्धि
र्भव = धीरगु बुद्धिदुष्ट ॥ जु ॥ मूर्खस्य
= मूर्खया ॥ जन्म = जन्म ॥ निरर्थक = व्य
र्थहेखः ॥ कृतकर्म = ज्यायायधुंकुला ॥
भृत्य = च्यो ॥ कोमारविसन्तर = विसन्तर
राजकुमार ॥ सदागमद्विसहिताः थः सतिरि
मद्विसहिते ॥ वनमाश्रितः वने स्वने ॥ ० ॥

कानने = वने ॥ मागच्छ = वन्यमत्स्य ॥
॥ १॥ पितापुत्रौ गच्छतः अनुवका
वन ॥ २॥ सिंहः सिंहनीन ॥ शावकान्
= मचोतेत ॥ यत्नेन = जत्ने ॥ पालयति
= पालेयाई ॥ ३॥ वने वने = जंगले २॥
कोकिला करवो = कोकीलजंगते
गुशब्द ॥ श्रुयते = तायदु ॥ ३॥ धरि
त्री = पृथ्वीवि ॥ वहनो = आपाले ॥
रत्नानां = रत्नया ॥ जनयित्री = उत्पत्ति
याइत्वरवः ॥ — ०५ — ॥ — ०५ — ॥

अष्टमपाठ

२८

यशोधराः जसोधरा धया ह्य ॥
 एहुलकुं मारुणा ॥ जननिः माम
 ख ॥ राक्षीः रानी ॥ सीविकारुधः
 मेना चना ॥ यातिः व० नो ॥
 राक्षीः राजा ॥ दन्त पात्रिया ॥ दुहि
 ताः स्त्राय ॥ यामीनि प्रभातः द्या
 ॥ अष्टमपाठ ॥

यशोधराः जसोधरा धया ह्य ॥ राहु
 ल भद्रस्यः एहुरकुमारमा ॥ जन
 निः मामख ॥ १ ॥ राक्षीः राजा ॥
 दन्त पात्रियाः दन्तपात्रिया ॥ दुहिता
 : स्त्राय ॥ २ ॥ यामीनि प्रभातः
 द्या त्विद्यातल ॥ राक्षीः रानि ॥

२८

सीवीकारुठः मेना चना ॥
 यातिः व० नो ॥ बुद्धः भद्रानयत
 प्रार्थयतः पं ॥ पुत्रवति भव
 कायमच्युतुमिमा ॥ ३० ॥
 नवमपाठ

धावतिः धावना चोत्त ॥ चोरम्ः खु
 यात ॥ प्रतिनिवर्ततिः लिगनाहे ॥ १ ॥
 इतिः थथ्य ॥ मेः जिगु ॥ मातेः विचा
 रदु ॥ २ ॥ बुद्धेवाचः बुद्धधयावि
 ज्यत ॥ ३ ॥ यस्यः गुह्यसिचा ॥ या
 दृशीः गजागु ॥ साधनः ज्यारवः ॥
 तादृशीः अजागुहे ॥ सिद्धि भवतिः
 फलज्यो ॥ ४ ॥ आचर्यानीम्ः गुरुमा

यात ॥ शिष्यः शिष्यमन्त्रं ॥ अर्चयति
= माने याई ॥ ५ ॥ साः ब्रमिसा ॥ तस्य =
ब्रया ॥ मातुलानी = मलयजुखः ॥ ॥

दसम पाठ

उपायराहिततसाध्यः यतसा
ध्ययतसाध्यनपरक्रमै = जल
वज्या अवस्यसीद्वज्या गुज्या प
राक्रमसीद्वज्विभरखु ॥ वाष्वा
रन्य = वाष्वा रन्यना जुया वगु ॥
जंगले ॥ कर्पूरतिलकनाम =
कर्पूरतिलकना जुया व्वस ॥
हस्ती = कीसी ॥ अस्ती = दु ॥
यकदा = दहया दीसी ॥ तम =

वक्रिसीयात ॥ अवलो व्य = वना
ततवरावासीत = ववने व्यपि ॥
सर्व = पुक ॥ शृगाल = धतस्ये ॥
चिन्तयति = ह्म = विचायात ॥

एकादश पाठ

यद्यर्थ = यदि ध्वं ॥ केनाऽप्युपायेन
= ध्वं जल ॥ मियते = सित धालसा ॥
तदास्माकम् = उवले जीत ॥ एतर्दे
हेन = ध्वयागु सरीर ॥ माषवतुष्टय
स्थ = लाप्यनाया ॥ खेच्छु भोजन =
धगु इच्छु माफिक भोजन ॥ भवेत्
= दे ॥

द्वादश पाठ

ततः = धर्मी ॥ तन्मध्यात् = इमिमध्ये

स्केन वृद्ध भृगुलिन = छल वृत्त
 ध्वनं ॥ प्रतिज्ञाकृत = प्रतिज्ञा यात ॥
 मया बुद्धि प्रभावात् = जिग बुद्धियागु
 प्रभावात् ॥ अस्म = ध्वयागु ॥ मरणाधा
 धयितव्यम् = स्याद्यगु ज्या यायमाल
 ॥ अन्त = लिपा ॥ स्ववचक = वदतुहा
 ध्वं ॥ कर्पूर तिलक समीपम् = कर्पूर
 तिलक या थास ॥ गत्वा = वना ॥ प्रगा
 म्योवाच = तमस्कार याता धाल ॥
 देव = हेमहाराज ॥ दृष्टि प्रकाशं कुरु =
 नजर याता विज्याहुं ॥ हस्ति = किमि ॥
 वृत्त = धाल ॥ कर्त्तव्य = ध्वसु ॥ कृतसमा
 यात = गत वयागु ॥ सोऽवदत् = वध्वेन

धाल ॥ जं बुक्ते ॥ ५६ = जिजं बुक्क धयाह
 ध्वं रजः ॥ सर्व वनवासिभिः = पुष्कवते च
 पि ॥ पशुभिर्निर्मितं = पशुत मिने
 जुया ॥ भवत् स्वकासः = ध्वपिगु ३७
 कोस ॥ प्रस्थापितः = दियो हयागुदु ॥
 यत् = ध्वययातिर्ति ॥ विना एता =
 जुगुप्सदेव ॥ स्थातुः = ध्वन्यगु ॥ नय
 त्कम् = उचितमजु ॥ तत् = ध्वययाति
 नि ॥ अत्र शरवीरज्ये = ध्ववनयागु
 रज्ये ॥ भवान् = ध्वपि ॥ सर्व स्वामि
 उगोपेतः = नापो योके दयमागु गुरगु
 संपुक्त गुपा चैह ॥ अमिधेवर्त्तः = नापो
 पदवीया अधिकार नीत ॥ निरूपितः

निर्यायगुल ॥ तत् = यथयानिति ॥
 यथा = गच्छ ॥ लग्न वे लग्नचतति = लग्न
 इत्ययाग वरवत् ६ विते गजुल ॥
 तथा = अथ ॥ कृत्वा सत्वर मागम्यतां
 देवेन = दक्षिणं याकर्त विज्यायमान ॥ इत्यु
 क्ता = धुनिधया ॥ उधाय चालित = दना
 वत् ॥ ततः लो = धनं निध्व ॥ राजालोभा
 कृष्ट = राज्यागु लोभं लाह ॥ कर्पूर
 तिलक = कर्पूर नाम किमि ॥ शृगालेन
 प्रदक्षितः = ध्वंनं कपना व्युगु ॥ वर्त्मनि
 लै ॥ धावन = धौर्वं ॥ महापङ्के = महानाह
 ॥ निमग्नः = दुःख ॥
 ततः = धनं नि ॥ तेन हास्ते नोक्तं = व

किस्मिं धाल ॥ सखे = हे मित्र ॥ शृगा
 ल = ध्वं ॥ किमधुना विधेयम् = आ
 द्युयौ ॥ महापङ्के पतिताः ॥ हम् = जि-
 महानाले तुन ॥ शृगालेन = ध्वंनं ॥
 विहस्योक्तम् = हिला धाल ॥ देव = हे
 महाराज ॥ मम पुच्छाग्रे = निगुलेप
 या चवर्कौ ॥ हस्तं दत्तं तपोस्मिन् - हा
 तिज्वनादं ॥ यत् = दाय धा सा =
 मम वचसी = धी गृह्ये ॥ त्वया
 दं ॥ वीज्या स कृतं ॥ वीज्या सघातः
 तस्य = उक्ते प्रागु ॥ पलमेतत् =
 कलत्रम् = तत् = धनं ली ॥ महा
 पङ्के - महानाले = नीमग्न = तु

ना च्यै ह्य = हस्ती = कीर्ति = मृत = स्त्री
 त = पश्चात् = लिप्ता ॥ सीङ्गल =
 चतस्रे ॥ अक्षीत = नल ॥ ॐ

दुतियपाठ

यस्य = गुप्ति सीया ॥ बुद्धी = बुद्धी
 दु ॥ तस्य = वया ॥ बलम = बल
 निर्दु चैस्तुः ॥ बुद्धीमदुत्त सीया ॥
 कुतो बलम = बलगरादै ॥ मय
 रनाम्नी = मन्दर नाम जुया च्वगु
 पर्वते = पर्वते ॥ दुदान्तो नाम =
 दुदान्त नाम जुया च्वेय ॥ स्त्रीहो
 स्त्रीह ॥ अस्ती = दु ॥ सच = वस्ती
 हया ॥ सदा = हीनस्य ॥ पसुना

पसुपीन ॥ वीध्वजारायवास्त
 = स्वामिन् च्वगु जुया च्वगु जुया
 च्वगु ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ

एक ॥ तत = धर्नलि ॥ एकदा = छरु
 यादिने ॥ सर्वे = फुक्क ॥ पशुभिर्मिलक
 कृत्वा = पशुत मिले जुया ॥ सरिंहो =
 नमिह याके ॥ विज्ञप्तः = विन्ति यात ॥

देवः हेमहाराज ॥ किमर्थ = छुया
 निति ॥ सर्वपशुवधः फुकपशु
 स्यायगु ॥ क्रियते = याना विज्याना ॥ वय
 मेव = जिपिंहे ॥ भवदाहार्थः छलपो
 लया आहारयानिमित्ते ॥ प्रत्यह मेकै
 के = हिनस्य छल छल ॥

30
पशुमुप डोकयामः = पशुचहे
यां ॥ सिंहेनोक्तम् = सिंह धाल ॥
यदे तदभिमतं भवताम् तर्हि भवतु
= छिमि आमथ्य इच्छा दुसाम्बाल ॥ ॥

ततः = थनंलि ॥ प्रत्यहमेकैकं = हि-
नस्य छल छल ॥ पशुः = पसु ॥ भ-
क्षनास्ते = नया च्वन ॥ अथ कश्चित्
= थनंली छरुयादिने ॥ कस्यापि = सुं छ
ल ॥ वृह शशकस्य = बुराल खरा चिया
॥ वार प्राप्तः = पाला वल ॥ — २५ — ॥

ततः = थनंलि ॥ सोचितयेत = वं
विचारयात् ॥ मन्दमन्दः = विस्तार
विस्तार ॥ उपगच्छामि = वन्य ॥ ततः

32
थनंलि ॥ सिंहोऽपि = सिंह न ॥ तस्य
= वयागु ॥ विलेव = लिवागु ॥ दृष्ट्वा =
खना ॥ शुभापीडितः पीत्पागु लि
हहजुया च्वल ॥ कोपात् = तमे ॥ तम्
वाच = वयात् धाल ॥ — २६ — ॥

कुतस्त्वं = छो छु ॥ विलेवदागता =
लिवाक वयागु ॥ शशकोऽ
ब्रवीत् = खरा च धाल ॥ नात्रमेको
पि अपराधः = यनजिगु छुक सूरम
दु ॥ पठि = ले ॥ अन्येन = मेल ॥ सिंह
न = सिंह ॥ बलात् = जवरजास्ति ॥ धृ
तः = च्वन ॥ तस्याग्निः = वयागु न्या ॥ पु
नरागमनाय = हाकनं ल्यो वै धका ॥

सपथं कृत्वा = पापेका ॥ स्वामिनः
 लपोलयाके ॥ निवेदयितुं = वित्ति
 यायत ॥ अत्रागतोष्णिः = थनवया ॥
सिं हो = सिंह ॥ सकापमाह = तं
 मेका धाल ॥ सत्यरंगत्वा = या
 कनं वना ॥ मां दर्शय = जित क्य ना वु ॥
 असौ = थ्व ॥ दुरात्मा = दुष्ट ॥ कः = गन
 तिष्ठति = च्च ना च्चन ॥ ततः = थनलि ॥
 शशकः = खराचो ॥ स्तं = वसिंहयात
 ॥ गृहित्वा = वना ॥ गर्भीरकूप समीप
 मागतः ताजागु तुं या समी पवल ॥

अ त्रागत्य = थनवया ॥ पश्यन् =
 स्वया विज्याहु ॥ स्वामि = हेम-

हाराज ॥ इत्युक्त्वा = थुलिधया ॥ त
 स्मिन् कूपजले = वतं यागुलखे ॥
 तस्यैव = वयागुह ॥ प्रतिविक = कि-
 पालु ॥ दर्शिवान् = क्य ना विल ॥ तत
 = थनलि ॥ असौ सिंहो = थ्व सिंह ॥
 दर्पाध्मात् तस्य = थः गुकिपालुया
 त शत्रुधका स्परिविधाना ॥ पूषस्याप
 रिः तुं या च्च ॥ आत्मानं = थथ्यथमे ॥
 निक्षिप्यः कवाना ॥ पचं त्वंगत = स्ति

तृतीयपाठ

दुर्जनसंसर्गः मभीपि मनुतेगुसंग
 ते ॥ त्यज्य = तोति ॥ साधुसमागमम्
 = ज्ञानिपिनिगुसंगतभज = या ॥

कश्चि ॥ कस्मिन्चित् = छगु ॥ प्रान्ते
 = देशे ॥ महान् = तमागु ॥ पिप्पल
 क्ष = पिलासिमा ॥ अस्ति = दु ॥ तत्र =
 वसिमां ॥ हेसकाको = हेवको ॥ निव
 सत = स्वना-बंगु जया चन ॥ ॥

अथ = धनंलिलिपा ॥ कदाचित्
 गृष्मकाले = छहुतापलाया
 बखते ॥ परिश्रान्त = थके जूला ॥ पठिक
 = वदुवा ॥ तत्र स्तरुतले = वसिमाया
 के ॥ सुप्त = दपन ॥ ततः = धनंलि ॥ क्ष
 णान्तरे = भचा जायका ॥ तन्मुखान् =
 वयागुरबाल ॥ वृक्ष छाया = सिमाया
 किपालु ॥ अपगत = किना वन ॥ ॥

अन्तर = लिया ॥ सूर्य तेजसा = सु
 र्य यागुतेज ॥ तन्मुखे = वयागु
 ५ खाले ॥ व्याप्त = कथा बंगु ॥
 अबलो क्यः खना ॥ कृपयाः दया
 दुल्ल ॥ पुरायात्मा = धर्म चीतनुया
 च ह ॥ तत वृक्षे स्थीतेण = वसी
 मान्यह ॥ हसरजेराः राजहेरं
 ॥ पक्षौ = पेपु ॥ प्रसाये = चक्रका
 ॥ तन्मुखे = वयागु खाले ॥ दया
 कृतः कीपाल कीका विल ॥
 ततः = धनंलि ॥ निर्भयं = निर्धका
 साथं ॥ निद्रासुखिनाः स्थायागुमो
 जेलाना चंल ॥ पथिः लै ॥ भ्रमणाकु

त-मुषेः वयागु रबाले ॥ द्राया कृत्वा
 : कीपालु कीकाबिल ॥ ५५ ॥
 लेनः चारिलाजुगुलित्यानुया ॥ परि
 सान्तेनः थकेजुस्ते ॥ पान्थेनः चारु
 जीस्ते ॥ मुखव्यादानं कृतंः स्तुतुवा-
 रबाल ॥ अनन्तरंः थनेलिलिपा ॥ स्व
 भावदोर्जनः स्वभावहेदूर्जनस्त ॥
 परसुखमः मेवया सुखजुगु ॥ अस-
 हिष्णुः सहयायमफुल्ल ॥ ॥ सका
 कः वकोनं ॥ पाठिकस्यः वटुवा
 यागु ॥ मुखेः स्तुती ॥ पुरिषोत्
 सर्गकृत्वाः रिकाना ॥ पलायतः
 विस्यूवन ॥ ततः थनंलि ॥ यावत्

थुथां ॥ असौः थवुदुवा ॥ उत्थाय
 = दना ॥ उरुं निरिक्षतः चेसोवले
 ॥ तेनाहंसोः वहेयात ॥ अवलोकि
 तः रवना ॥ धनुषाहतः धनुकंके-
 कल ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

चतुर्थपाठ

उपायचिन्तयत् प्राज्ञस्तथा
 उपायः चिन्तयेत् सस्य
 पिमनुतसे ॥ उपायविचारयायमा
 ॥ दक्षिणपथेः दक्षिणपारथे ॥ वि
 न्ध्यामपर्वतः विन्ध्यनांजुयाचंगु
 पर्वत ॥ आस्तिः दु ॥ तत्रैवः अनेह
 सन्तु ॥ नर्मदातीरेः नर्मदानांजुया

४६
चंगु खुसिया सिधे ॥ वटपादपे =
वरमा ध्यागु सिमां ॥ वका = वोहत
॥ निवसन्ति = चना चन ॥
वटपादपे = वरमा ध्यागु सिमां
॥ वका = वोहत ॥ निवसन्ति = चना
चन ॥ तस्य वटस्य अधस्तात् =
वृषसिमायां ॥ सर्पतिष्ठति =
सर्प चना चंगु जुया चन ॥ सच
= वसपनं ॥ वकानो = वोहते ॥ बाला
पत्नानि = बालक मचाते ॥ रवादति
ने गुजुया चन ॥ ततः धनं लि ॥ शा
कागुरानो = सोकं आकुल जुया
चपिं ॥ वकानो = वोहते शुभ वि =

४७
साप श्रुत्वा = वितापयागु नरा ॥
केनाचित् = सुखल ॥ वृद्धनवके
नोक्तम् = वुरसु वोहन धाल ॥ भो
वक = हवो ॥ यूयम् = छिमिस्व ॥ स्व
वम् = धथ्य ॥ कुरुते = या ॥ मत्स्यान्
आनीय = न्यात कया हया ॥ नकुल
विवरात् आरभ्य = नव चा चनीगु
धासनिस्ते ॥ सर्प विवरयावत् =
सर्प चनीगु धालेतक ॥ सकेक
सो = छलु छल ॥
पंक्ति क्रमेण = जालाक ॥ मत्स्यान्
= न्यात ॥ विकीर्य धरिष्यथ = छ-
लाति ॥ ततः धनं लि ॥ ततः व ॥

४८
 आहारवर्त्मनाः नयगुदुगुलिं॥
 नकुलेन आगत्यः नवचा वया॥
 द्रव्यः खनी॥ स्वभावद्वेषात्
 = स्वभाविकदोषं॥ सर्पम् = सर्प
 यात॥ व्यापादयितव्यः स्थाना
 बी॥ ॥ तथानुस्थितेः थथ्यहे
 यात॥ सतितत्तुतम् = लिपाअथ
 हे जुल॥ अथ नकुलेन = थनैलि
 नवचा॥ वृक्षोपरि = सिनायाच्चे
 ॥ पक्षिशावका = बोहया मचातेगु
 ॥ रवश्रुतः शब्दताल॥ पश्चात् =
 लिपा॥ तेन नकुलेन = वनवचा॥
 ससर्पः वसर्पयात॥ भक्षितः

४९
 नली॥ पंचवीषतीपाठ
 नीच = द्रोताह = श्लाघापदप्र
 प्यः = तारीफ यायगु दर्जीपावेजु
 या॥ स्वामीतं = मालीक यात॥ हनुमी
 पदी = स्यापगु इच्छायाइ॥ गौतम
 रणे = गौतम यागुवने॥ महत्तपासा
 म = महातपा नामजुयायंइ॥ म
 नीहसी = असीदु॥ तेनव॥ अथ
 मनीघाते = आप्तामयाह्याने॥
 मुष्टीकशावक = दुयामयाकाकमु
 स्वात = कोयागुलुतु॥ अथतोदुष
 = कुतुवगु खन = तत = अनली॥ दया
 ॥ युतेन = दयादुल = तेन = वं॥ तेन

मु नी ना = वृषाही नं ॥ नी वार क नै =
 वा बु इ न ॥ अ शौ ख = मु सी क = दु या
 त = स व द्नी त = स्या ना दू त = ~~स~~ =
 त भव मु सी कं = व धुं या त ॥ खा दी
 तु मनु धा व न् = ने ध का ल्प ल्प धौ व
 स ॥ वी दा ला = मे चा या त ॥ मु नी
 ना = ऋ षी = प स्वा त् = ली पा ॥ त प म्
 मा व स्वा त् = त प म्वा ग् प्र मा वे ॥ ते न
 मु नी ना ~~व~~ ऋ षी = मु सी क = दु
 या त = व ली ष = व ल्वा ह्म = वी दा ल
 कृ तः शौ चा या ना - वी ल = स वी
 दा ल = व मो चा = कृ कृ रा त = स्त्री
 चा ख ना = वी मे ती ग्या त = त तो =

य थ या नी ती = अ सौ ~~प~~ या त ॥ कु कु
 र कृ त = स्त्री चा या ना वी ल = कृ कृ
 स्य = स्त्री चा या = व्यौ धा त् धुं ~~स~~ ना
 या के ॥ म ह त भ य म् = आ पा ल् द
 द ॥ त द न न् न रं = य न ली ॥ स व ॥
 व्या घ्रे कृ त = धुं हे या त ॥ अ थ = थु ली
 या य धुं का ली नी ॥ व्या घ्र म पी =
 व धुं या त नं = मु सी क नी वी शे
 स = दु या सी नं क र क म भु र्गु =
 मु नी ~~व~~ ऋ षी ॥ प म्वा ती = खं ॥ ॥
 अ थ = य न ली ॥ स र्वे = पु र क ॥ त्र त त्या =
 अ न या ॥ ज ना = म नु ष्य त ॥ त व्या
 ध्र = व धुं या त ॥ दु ष्टा = ख ना ॥

अनेन सुतीना = वृक्षणीं ॥ मृसी
 कोऽयं = अद्य यात = व्याघ्रतानी
 त = धुंयानाधका ॥ वदती = धाला
 एतत् = अखंन्यना ॥ सबाधो =
 पधुं ॥ अपि तोऽचि नयत् = दीक
 याया वीचारयात ॥ यावद् = अथा
 यतक = अनेन मुनिना = अरी
 सी ॥ जीवी तब म = म्वा नाव्यनी
 ॥ तावत् = अथा यतक ॥ इदं
 म = अवीगुस्वपाश्या नम अ
 कीतीकरं = वदले पुगुरु पयाग
 वदनामीयका ॥ न अपयासती
 तन्मीमरु = इती = धुली ॥ समा

लोच्य = वीचारया ना ॥ समुनी =
 वृक्षणीयात ॥ हनु मउयत = सा
 यत्यना ॥ मुनिना = मृसी ॥ तस्य =
 वयागु ॥ यि कीर्षीतं नात्वा = इक्ष
 सीका ॥ पुनं = हाकनं वमुषीको
 मव = दधुंनु ॥ इत्युक्ता = धुलीधया
 ॥ सुपुनं मुषिक एव कृत = वया
 तधुं हेतुं यावील = ॥ ॥ ॥

षष्ठमपाठ

सहसा वीदधीत न कीयात् =
 व्याधुं वीचारमयास्य याचगु
 चीकमभु ॥ उजयीया = उजयनी
 धयागु सहरे = माधवी साम =

माधवनाभुयाय ह्य॥ ब्राह्मन=प्रा
 भु द ह्य॥ अस्ती=दु= तस्य व व ह्य॥
 पत्नी= कलाया॥ प्रसुता= मया बु
 ग्नुया च्यन्त॥ सा= व व ह्य॥ नीनं=
 कालापत्य दानार्थं= मया यात की
 चायायत॥ स्वा मीनं म व ह्य॥ पा=
 मा त ह्ये सी त पी वातया॥ ह्ना तु= से
 नुया ही त॥ ग ल व ल॥ अर्थ= थन
 ली मया बाध का= ब्राह्मनस्य कु
 ते= व व ह्य॥ या नी ती॥ राज= राधा
 या= पार्व शा आ द्य वी त स त व ह्य॥
 म नू= अण त व ल= त दृष्टा= व
 द्य वी त स त वा गु म्य ना॥ ब्राह्मन=

ब्रह्म॥ सहजदा शी घात= गरीष
 भुया नी ती॥ अ वी त स त वी चा
 रया त॥ य दी स व रं न ग च्छा मी=
 य दी जी य च्छे या क नं म व त धा ल म॥
 त दा अन्यः क च्छी त= मे पीं सें ग व
 ह्म स्यें॥ आ द्य ग ही ण ती= आ द्य
 के ला पा रे या ना क या य नी॥ अत्र=
 व त धा मा॥ सी सो अ र क्ष क= स
 पा या त पी वा च्य नी ह्य॥ को पी
 ना स्ती= सें हे म दु= त त कीं क रो
 मी आ द्य या य गु॥ वी र काल पा
 लि त म= ता कालं त क ल ही नी ना
 त ह्य॥ अ मू न न कु ल= व न व

५८
 दी-त तुं॥ बालरक्षा र्थं व्यवस्थाप्य-
 मया यायां पीवा तया॥ गच्छासी-
 वन्य॥ तथा कुत्वा गता-अथ हेन
 वना पीवा तया वन-तत-धनली-
 स्तेन त कुलेन-वनवया-गुरु
 प्रविशन्-दों द्रा हा वम॥ ह्यो
 दृष्ट-रूपया त मन॥ खरिडध-
 तुक्ता तुक्ता वं यात-अथ-यन
 ली-असौ न कुलो-वनवया
 प्राह न॥ व्रह्म॥ आयान्त-वेगु-
 अपलोके-खन्या॥ रक्त वीली
 क मुख पाद-ह्यती तु ती हि क्युल॥
 सलरम-रुत पत॥ उपगम्य-

५९
 न्या क वना॥ तस्य व प्र सु या॥
 चरन र्थे लु लोत-तु ती गवा
 गवा तुल॥ तत सौ-अनली
 ध्व॥ ब्राह्मन-व्रह्मन॥ तम-
 वनव चा या त॥ तथा विधम-
 थु ग ताल॥ दृष्टा-खना॥ अ
 ने त-ध्व॥ म म फु तो-वी मी कं
 या त-मदी त॥ स्या ना नज-
 वी धका-इती॥ यथ-अवी
 चार य व-मरुगु वी चारं॥
 तम न कुल म-वनवची त॥
 व्यापा दी तवान स्या ना वील॥
 अनन्तरं-लीपा॥ यावद-वन
 उप म-मती क वना॥ ब्रा

५८
 हु रो = ब्रह्म शांत पश्म ती = स्वं वें व
 ले = स्तावत = उगु थास ॥ बालक =
 मय ॥ सुस्थ = मज्जा ॥ स्वकी ती =
 द्य ना चन्त ॥ सपक्षु = सपक्षु हसी
 या तनक ॥ व्यापा दी तसीष्ट ती =
 स्याना तल ॥ ततोऽसौ ब्राह्म न = थ
 नली च ब्रह्म ॥ पर वी बाद मु पग
 तः = सापहे नुगमदीं गुदु खेलात
 मप मपा ठ

गुरु जेना दे श = म्य नेय य माह
 उपदे स व्यु ग र्वे = न व था = ह्या
 वले ॥ पाल नीय = पालना या यजे
 ग्य ॥ कसी वीत अधीष्टा ने = दगु
 था मे ॥ सु बुधी नामा = सु बुधी ना

५९
 पु या वें हु = ब्राह्म न = ब्राह्म न ॥ प्रती
 स्म = वना ॥ वंग्रुया च न ॥ सव
 व ब्राह्म न या ॥ प्रयो धन व म्मा त
 ज्या द गु या लागी ॥ अमि प्र ह्यी
 त गामे व न्य स ना ॥ स्व मा ता
 प्र आ मां नं ॥ आ मी ही त = धाला
 वत्स = हे पु ता ॥ कथ म टका को
 ब्र भासी = ग थ या क च व न्य त्थ ना =
 तद = अथ या नी तीं ॥ कधी तद्वि ती य
 मु मे हा ॥ शरु म = वासा ॥ अवि ष्य ता
 माः हु ॥ स आ हु = व को य हा
 स्वे धाला ॥ अम्बा = हे मा ता ॥ मा
 मै षीः = धन्दा क या वी ज्या प्र स
 म ज ॥ ति रूप द्र को य प न्या =

धले हैं जीउ मरु॥ कायवशात् =
 ज्याया लागी = एका की गमीषमी =
 याक चाहै वन्या॥ अथ = यत्न ली॥
 तस्य वयागु॥ तन्नि = अथ ज्ञात्वा =
 वन्ती अथ सीमा॥ समीपस्य सर
 सात् = सती क्वचगुपुखु लीक
 कतम एकम आदाया॥ कंगाली
 दृष्ट कयाहया = मात्राऽभीहीतम् =
 मामस्मै धाल॥ वत्स = हेवाफा॥ अ
 वस्यं यदि गतव्यम् = यदि अवस्य
 वन्तहेमापैगुप्ता = कर्कतोऽपी =
 अकंगालीनं = शहायस्तेन वतु =
 दन् शहायजीमा॥ सोऽपी = अत्रा
 ननं॥ मातुः अदेसः = मोंयागुआ

मा अन्तसार॥ पानी मों = नीपा
 ला ती॥ तसंगुह्य = वकंगालीया
 तज्वना॥ कपुरपुती कामध्ये =
 बपुतायादुन्य॥ नीधाय = तय॥ =
 सीघ्रप्रतीक्षीत = याकनहेष
 ना॥ अथ = यत्नलि॥ गदन्त =
 वं बले॥ ग्रीष्मे मंगीमी॥ संतप्त =
 तौवया॥ फ = जी तमहे॥ सप्त =
 द्यन्तम् अवन्तरे = तुलीयावीये
 वृक्षार = सीम॥ एकसर्प = ६
 सप्त॥ तस्य समीपम् = ब्रथाया
 सति क॥ आगत = बल॥ सोऽपी =
 वसर्पितं॥ कपुर रुगन्ध = कपुया
 गुवास्ता॥ सहनपीयत्वम् = स्वा

भा बहे योग्यु यानि ती॥ तं प्र
 रि त्यज्य = व प्राज्ञा या त तो ता॥
 वस्तुं की दाय भ्यन्तर गत्या = का
 प सु ना दुन्य द्यौं वना॥ कपुटपुती
 का मती लोल्या त अम क्षत = कपू
 पूरी न्या दालो मं तल॥ सोऽपी = व क
 गाली न॥ त नै व = अ न हे॥ स्त्री ला =
 च्च ना॥ सर्प प्राणा त = सर्प याग प्रा
 तं॥ अ पा ह र त = काल॥ प्राज्ञा त
 ऽ पी = प्राज्ञा नं॥ या व त प्र बुद्धः प
 इय ती = स्त्रे प लं चा य का दना स्त्रो व
 ले॥ ता व त समीपे = उ व ले स ती क॥
 कृष्ण सर्प = हा कुल सर्प॥ नी न पा
 र्वे = व या ग द या के = कपुटपु ती का

पति = कपु व ता या वे॥ मृ त ती क ती
 स्त्री ता च्च न॥ तं दृ ष्टा = च्च या त र व
 ता॥ असौ अ ची त ये त = व वी वा
 र या त॥ कर्क टे ना य ह त = कं गा
 ली च्च या त स्य ना त न॥ ५५॥
 ती प्र स न्नो भुक्ता = य थ पु या च्च
 गु र्व ना र्थ सी पु या॥ अ व की त =
 धाल॥ भो स ल म अ मि ही त म
 म म वा ता = र्थः पाः जी सा सं धा
 गु ष क द॥ य त् पुरु षे न को
 पी श हा य वी दे श ग म त = गु
 गु र्व म नु षे प र दे हा व न्य त
 स हा य पा सा द य क माः॥ स
 का की ना ग त व म = या क वा व

Ex 56

Ex 56

नमः ॥ यतो = यथ प्रानीती ॥
मया ॥ अद्वा पुरित चे त सा =
अद्वा पूर्णक गुचितं ॥ मातु वच
न म = मीया गु वचन ॥ अनुष्ठित
म = पा लना या ना ॥ तेन = भु के ॥
अहं = नी ॥ कर्क ते त ॥ कंगाली
या पा र्वे ॥ मपी प्र क्षी त = मर्ष
या के व चे शु या ॥ २५ ॥ २५

अष्ट स पाठ

अती लो मो न क त व्य = आपा
लो मया गु म ख ॥ ॥ मालव
देशे = मालव मा भु या ख गु ॥
दसे ॥ पद्म ग र्भिता मधेय = पद्म
ग र्भिता भु या ख गु ॥ सरः = बुभु ॥

असी = दु ॥ त त्र = अन ॥ श्वेता = द
हा ॥ वृद्ध = वृग्गु ॥ व क = बो ॥
अधि ग्न सी वात्म नं दर्शयीत्वा =
यत वीरुत हा थ्ये व्य ना ॥ स्वी
त = च्च ना च्चन ॥ मय वयो ह्य
त ॥ के ना ची त कु ली र के न =
मृद ह कंगाली ॥ दुरा दे व दृष्ट =
आ का सं ख न ॥ पृष्ठ य = हानेन्य
ता कि म = दं ॥ मवान = दपी
आ हार परि त्यागेन = नम व्य
गु रीता ॥ तीष्ठ ती = च्च ना च्चन
॥ व के न चो ह न ॥ उक्ति = धाल ॥
मत्स्या = न्या ॥ मम = नी गु ॥ नी
वन हेतवः = नी व न या कार

६८
 तत्त्व॥ ते चा वश्य मे वदामी
 तपसा हे॥ कै वर्तेरागत्य-सा
 जित वया॥ व्यापा दयितव्या-
 स्याई॥ इतिवार्ता-थ थधया
 गु र्वे॥ नग रोपाने-इह रवा
 र्वे॥ मया ऋत्वा-विं न्यना॥ तदि
 तो-अथया नीति॥ वर्तनाभा
 का देवः-लजगा मदयका सो
 गुली॥ अथान्तरा-नी मीगु
 मरत॥ उपस्थिमी ती-थं क)
 वलनै गु॥ जात्वा-सीका॥
 आहारेऽप्ययनादरुतः-
 नयत्वन्यगुली नं वास्ताः
 मयाना॥ तत्त-तव॥ सर्वै-फ

६९
 क॥ मत्स्ये शलोची तत्त-व्या
 तस्यै वीचाश्यात॥ अस्मीन
 समये-पुगु वखतै॥ तावद-
 थगु हापा॥ अस्मा क म-जि
 गु॥ उपका रक-उपका र्याइ
 स॥ उपल स तै-ख न्मदु॥ तदम
 म-अथया नी ती॥ पुद्गता
 म-न्य न्यमाले॥ मत्स्या-त्यां॥ ३
 य-धाल॥ भो वक-हेवो॥ अस्मा
 क म-जीगु॥ कः अत्र र क्षोपा
 य-र क्षा जीगु उषा य द्दुदि॥ व
 को ददती-वो ह नंधाल॥ अ
 स्ती र क्षोपाय-र क्षा य मगुड

जायदु॥ जलाय यानराय
यनम=मेगु वरु पागुअ
यययायमा॥ तत्र=अन॥ अ
हं=जी॥ एकै कसो=दहादहा
याजा॥ कस्मिन्दि तदेहो=दु
दगुदेहो॥ नीला=यंका॥
खादीला॥ नयापुनः आगत्य=
हाकनं वया॥ बदती=घालते
इमीतामया=जि॥ जलासला
नारे=मेगुपुपुले॥ रथापेता
नयाविया॥ अनन्तर=लोपा॥
कुलिरक=कंगालि॥ तम्=वया
त॥ उवाच=घाला॥ भोवक=हे

कवो॥ मामुअपि=जितना॥ त
त्र=अन॥ नययंकि॥ ततो=
धनस्ते॥ वकोपि=वोहन्॥ अपु
र्वकुलिरकमांसार्थि=अपुर्वकं
गालियागुलाचाहयाना॥ सा
दहमानपुर्वक॥ तन्निवा=वकं
गालियातयंका॥ तत्रस्थले=व
थास्मेधूलवान्न=तल॥ ॥
कुलिरकोपि=कगालिनं॥ मस्थ
कराकार्किर्ग=न्यातेगु कंनं=
तोपुयातगु॥ तत्रस्थलमअव
लोके=वथायातरवना॥ अचि
तयेत=विचारयात॥ हतोस्मी

०१
मन्दभाष्य=निअभागीठहरे
सित॥ भवतुइदानी=म्वाल॥ स
मयोचितं=मोका अनुत्तारया
गु॥ व्यवहरामी=ज्योयां॥ इत्या
लोक्य=थजागुमतीलिका॥
सकुसीरक=वकंगाली॥ तस्य
वकस्य=ववोहयागु॥ नीना=
ककु॥ निवेद=वृहानावि
ला॥ सवकव=ववो॥ पञ्चवंग
तव=सिता॥ ॥ ॥ ॥

०३
प्रथमपाठद्वय
॥ शरीर॥ ह्य=मुर्धीद्वयो॥
कोस॥ सं

सरनमालदा कुमारी वसुधरा प्र
भुपा चरु ने दा नसीरतया वः ज
वपा गुरुवाल कुमकुम वरन
खव पागु रधा वही गुली वरुन
दयुया गुंरवाल सा सुगु वरन
सुर्य समान तेज थी ना चव
रतिया मनु कसीर संपुया व
प्रथम गुरु हा तं जप माला जो ना
व + दुती पगु हा तं जो वहा काँ जो
ना व ॥ त्री ती पगु हा तं अमयव
र की या व ॥ २ ॥ खव पा रव पय
मगु हा तं पुसा क जो ना व ॥ दुती
पगु हा तं वा गुई ना ना व ॥ ३ ॥

त्री ती पगु हा तं कल सजो ना व
दुखी पागु उपरे करु ना तया व ॥
सरनमालदा भी कुमारी ॥ दानया
माला ती साजुल वसया कल
सया जोने आसनया ना वः दु
खी न न प्रा नी उधारया प त
जगु ली सप कया व वी ज्या त
॥ ४ ॥ थव मचा सरी का प्रा न लही
ना अन धन र लव री पुरा की
याः खत गती थी नी गुली दु
प्रा नी थ व म चा माल पा म हा
व व वी व ॥ ५ ॥ सरनमालदा मा
मा हा पुता पी सु यो दय रत्ना

प्रजागन पी नव की चारम या ना
 पाप सँ भुले जु या लु जु या के
 धर्म मया न जल वसती मनु या
 प्र नंदर सी या ॥ ६॥ देव देवी ग
 न व स्या वी स्व महे स्वर प्राणी
 या गु व स कस्त व न सु सीता
 तु सीता भुवन व सु धरा देवी
 परने के मले वीनी या ना वाग
 माता जननी व सु धरा देवी अ
 स्व धौ स्व नंदो मुख थन दा सीस
 ता ॥ ७॥ सुरयो दय राजा बोधया
 ना वति लव तदन का उधार

पाना व ॥ ८॥ देवी या गु आना सी
 ल संत या व सुंदरी मी सा रु पक
 या व ॥ सु यो दय राजा या हजुरे मी
 सा नी स वना मे हाता चो ॥ ९॥ प्रजा
 ग न व नारा जाया हजुरे मी सी नी
 स व ता मे हा ता चो व ॥ १०॥ वीन तीया
 ना प्रजा त्या हां व नः जु गु या मन सँ
 धं ता का चो गु मी सा त व या मे हा
 ला चो गु मी नी म र व अ व से मैत्री
 भारदार ॥ ११॥ भा का स मा त मी दुना
 वल या य मा ल ग चे मं त्री का नी भार
 दारः सरन मा ल क्ष मी कु मा री व सु धरा
 प्र मया चरने दान से ल त या व ॥ १२॥ दी वी गु
 न

न नील मीसारूप तोत सुंदरी व
 राह रूप कयाव ॥ जुनु या पीयारो
 अश्वकव गै ^{या} तल गड सही तैं वी ध्वंस
 था नाव ॥ २१ ॥ महाप्रतापी सुयो
 दय राजा वीरह यता पें साहा क्रध
 जुया घैं तपोवन नगरे सकल जस
 हलौ यत वय मल परजा पी. ३।
 उत्तरे प्रजा द दीनेमं जी पदी मे से
 सा पति चु रुवे राजा पागु लीदी
 साही चो नेमा ल पहरा गुरवे वीरु
 वन सजा थाय राजा ॥ दीवेवरूप
 सुंदरि वराह शला जुल नीलसिंघ
 वने गड हार ॥ २

दुख सी थपरजां सजा यायराजा
 वन्य माल भी पी जुनु या गड हार ॥
 नीर्म ल आका शख न्यम दुसुपा-
 य अन थन मय करवने मल्ल सुपा
 पुल अधंकार देवी स्वरूप सुंदरी
 वराज वीरु वन नील जुनु या गड हार
 ॥ २६ ॥ लीना थन वरा हला व लाग
 धकारा जा सलगया वध न सजोना
 व दुरुवल थी का सुन्दरी वरा डस
 लया के दवीना जुनु ही के यन अ
 ची रजंग ले सी माया गुको सं
 जुनु यात तो ती देवी नील वन दु
 ख जुल जुनु या लुमन प्रज सुम

दुअन ची दवा दार खनः लं खतो
नेत्री स्नातु लं राजा अहे पाना धेत
पी रवा दार खनः जुनुया गुआजा सी
लसंत पाव लं खमा ला वं वं सुरी नदी
थे ना ॥ वं सुरी नदी तीरे अपसराग
नपी हा सुगु व स्त्र पुना वृत्त दाना
चो न ची दवा दार पाता मसे न घया ह
अपसरा गत नाप वृत्त दाना चो न ॥
सरनमा लक्ष्मी कुमारी वसु धरा प्र
भुया चरने दान सी लला याव
जन प्रस गुजो नासे बल्या हा व नम्र
पा के क्षे ने पुष्प की ली या त भुनु
खु सी गुया स ल पा के जाया

स क्षी प्र सस्कृत सवदवली
ओं नमः वागीश्वराय ॥ ॥
सरी रुद्र = मुर्धा = क्षी ॥ के स = स
री मची मी स ॥ ललात कपा ॥
चक्षु मी रवा ॥ श्रोत = ह्रस्व ॥ नासी
का = ह्रस्व ॥ मुख स्तुत ॥ आस्थिरघा
वी कुक मनः गन्ध नेता कन्ध थु
गी वग वदुस्त ॥ ॥ पादतु
(आका धातु) दी न वला दी क कान
न दी द दान वले स्प च सुर य नी
सव्य कारु न्य कल्प पु रे पर मे
सा न्त सी ल व ले ना सम ग
त बु धं सी ल व ला दी क कान
न ल सी द सल व ले स्प च

श्री

सुर्य-चीसब्द॥ कारु ने कलसे
पुन्य॥ ध्यानी बले न समुद
गतं बुधं- आनी बला दीक
दान लसीह आनी बले सी
च सुर्य-चीसब्द॥ कारु ने-
कलसे पुन्य॥ ध्यानी बले
ना समुद गतं बुधं, वील्ले
बला दीक दान लसीह-
वील्ले बले स्प च सुर्य-ची
सब्द॥ कारु ने कलसे पुन्य॥
ध्यान बले न समुद गतं बु
धं, ध्यान बला दीक दान-
लसीह ध्यान बले स्प च

सुर्य-चीसब्द॥ कारु ने कलसे
पुन्य-परबे साना॥ प्रग्या बले ना
समुद गतं बुधं, प्रग्या बला-
दीक दान लसीह प्रग्या बले स्प
च सुर्य-चीसब्द॥ कारु ने क
लसे पुन्य परबे साना इती श्री-
साक्य मुनी तथा गताय नम॥
श्री षट पार मीता स्तोत्र संपुर
न समापदम् । सूभम् ।

जगत्प्राणे किं जय

આણ ૨૦૦૧ ગવેલો

પરજીવીયેલો મોદર — ૫૨

ધરમાદીયલો મોદર — ૫૨

વાંચણીયલો મોદર — ૩૭

પુત્રીમા મોદર — ૨૨

ચલુકાલીયેલો મોદર — ૫૨

ધંતાસુર ચરમાલીયેલો મોદર — ૩૭

દારમારવરુચ મોદર — ૨૨

ગુગલો મા મોદર — ૧૨

આ મોદલીયેલો — ૧

આ મોદલીયેલો મોદર — ૧

મ્રાકિવ મિચના મોદલીયેલો ધાંતલીય

— યેલો — ૨ — ૧૨૫

મં નાં પુલીમાલીયેલો — ૨

ચલુકાલીયેલો — મોદર — ૧

૮૫

આગળનાગા મોદલીયેલો નામનાલીય

— — — — ૨

૮૧૨૫ લીચિયા ૨ મોદર — ૩

આં ૨૬૦૨૧ીયેલો મોદર — ૨

૬૯૦૨૧૫ ચલીયેલો મોદર — ૧

નરનામાદરલીયેલો મોદર — ૧

ગુગલો — — — — ૫

આતીવિચરુ લગ્નો મા લીયેલો ૨૫

મોદ પુજા મા લીયેલો ૨૫

પુલ અલી મા લીયેલો ૨૫

— — — — ૨૫

— — — — ૨૫

— — — — ૨૫

— — — — ૨૫

अनीत्यलुमकेगु

यों वा कहे दुरु की अवस्थ को माने समस्त धर्मों का
नो है जहाँ उनाक धर्म नही है बुद्धि काय है कि जहाँ

पुजायायगु

नाचाय। ओं नम भगवते पुष्प केतुराजाय-
तथागताय हते सम्यक् संबु ध्वाय। तदप्य
ओं पुष्प-२ माहापुष्पे सुपुष्पस भवे पुष्पो-
हवे पुष्पावकिरोः स्वाहा-। पुन भलथोये
॥ स्वस्ती अक्ष श्रीरत्नविमान मनि श्रीशाक्य
मुनि तथागतपर्याये- भद्र कल्पे सहजा-
म लोक धातु तैव स्वत मन्वतरे कलि
युग प्रथम चरणा भरत खण्ड उतर-
पांचालय हेमवत पीठे। वलसुकीक्षेत्र
उपखण्डे पिये श्री आर्या वर्त पुन्य
भूमौ कर्कतक नागराजाय

22

22

20

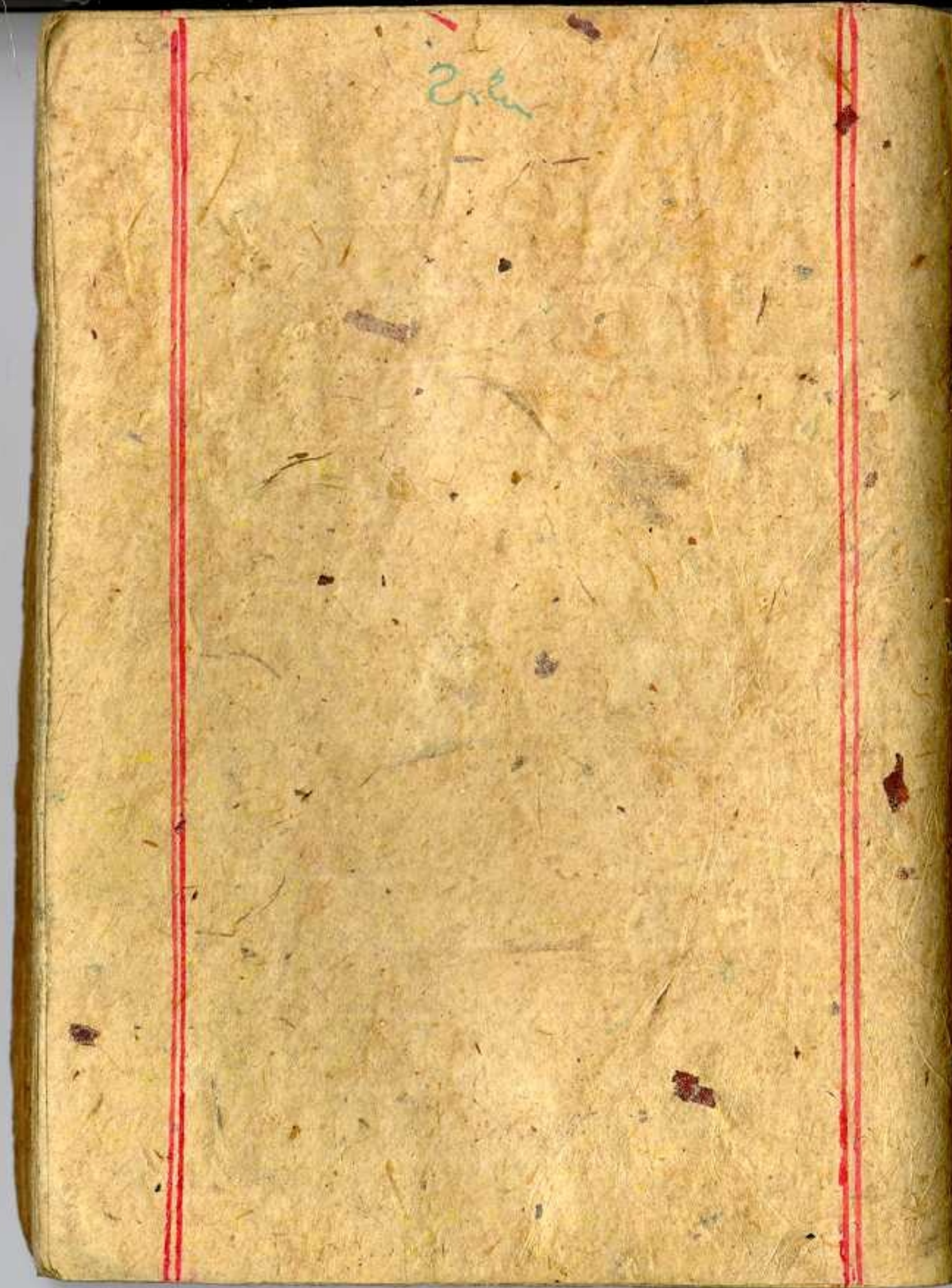
21

22

23

28

29



20

22

900

9009

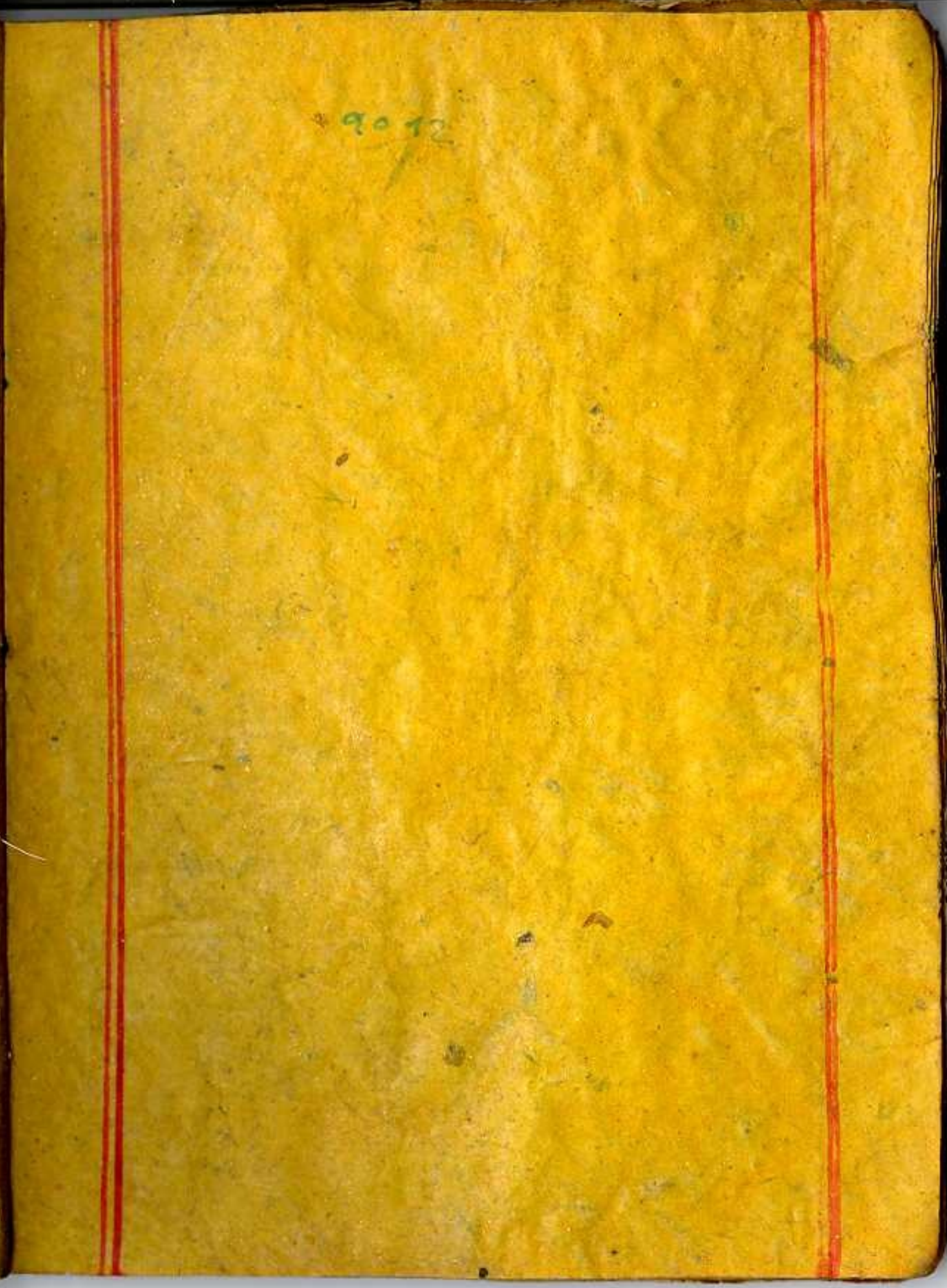
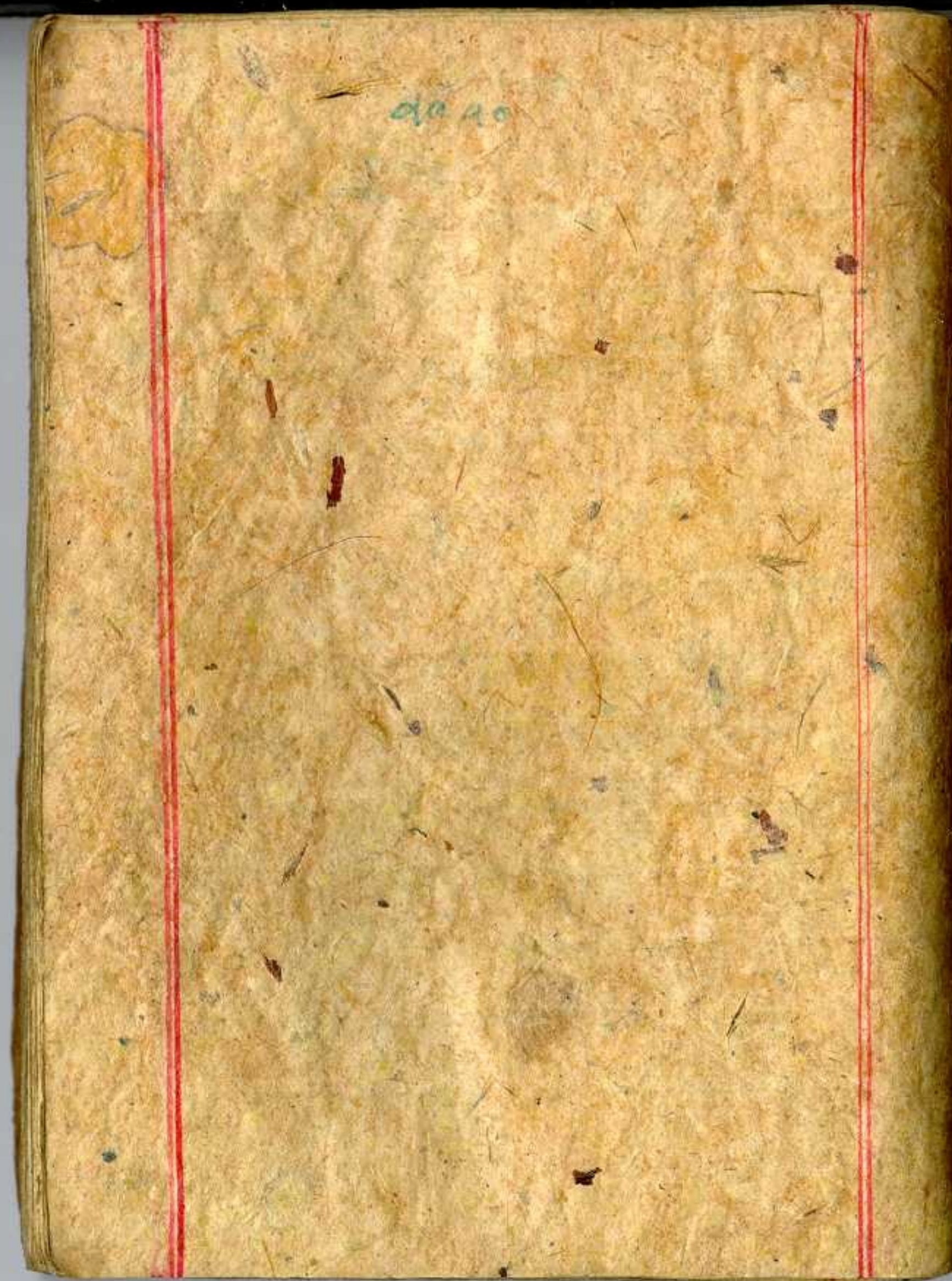
902

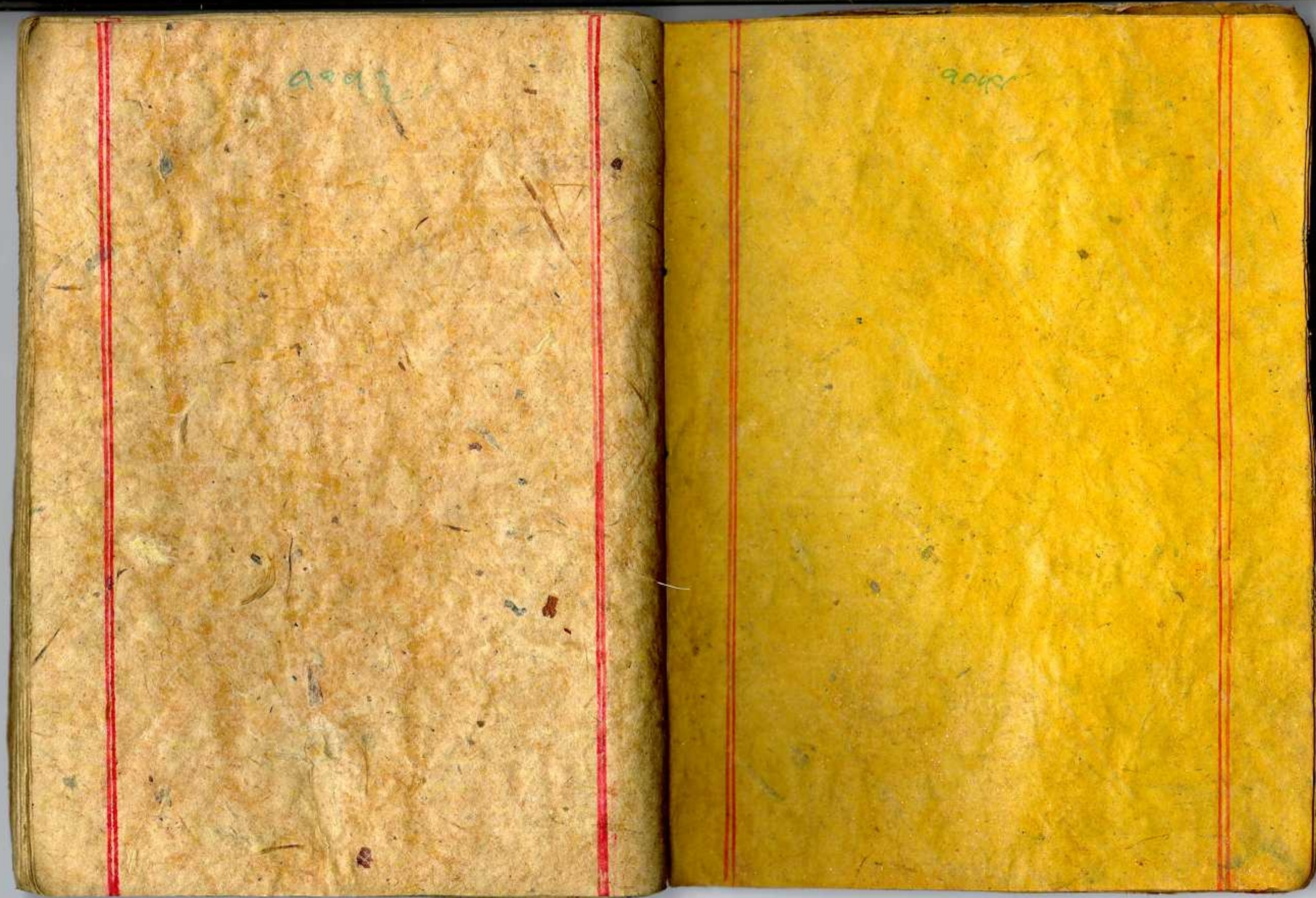
903

905

904

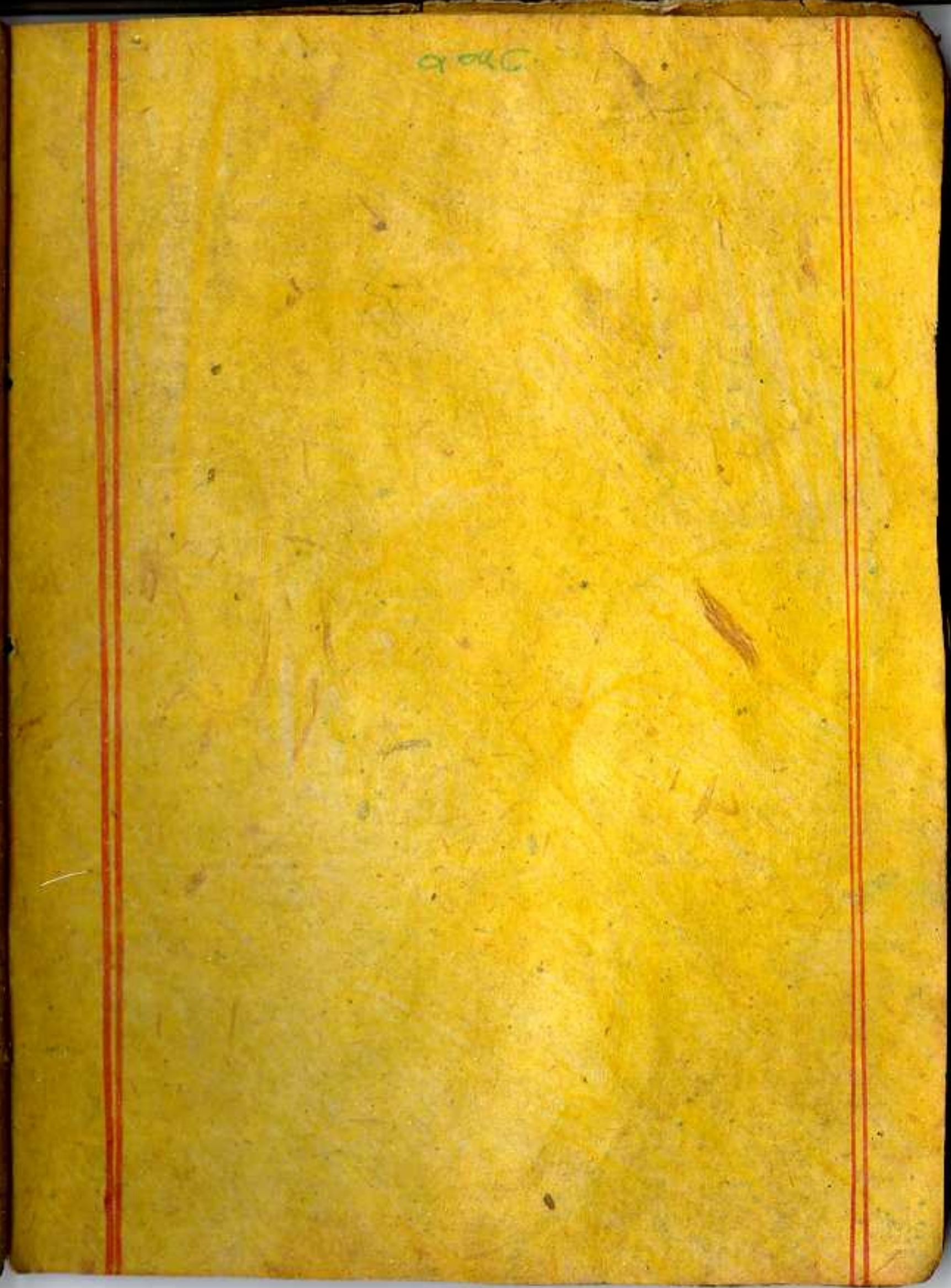
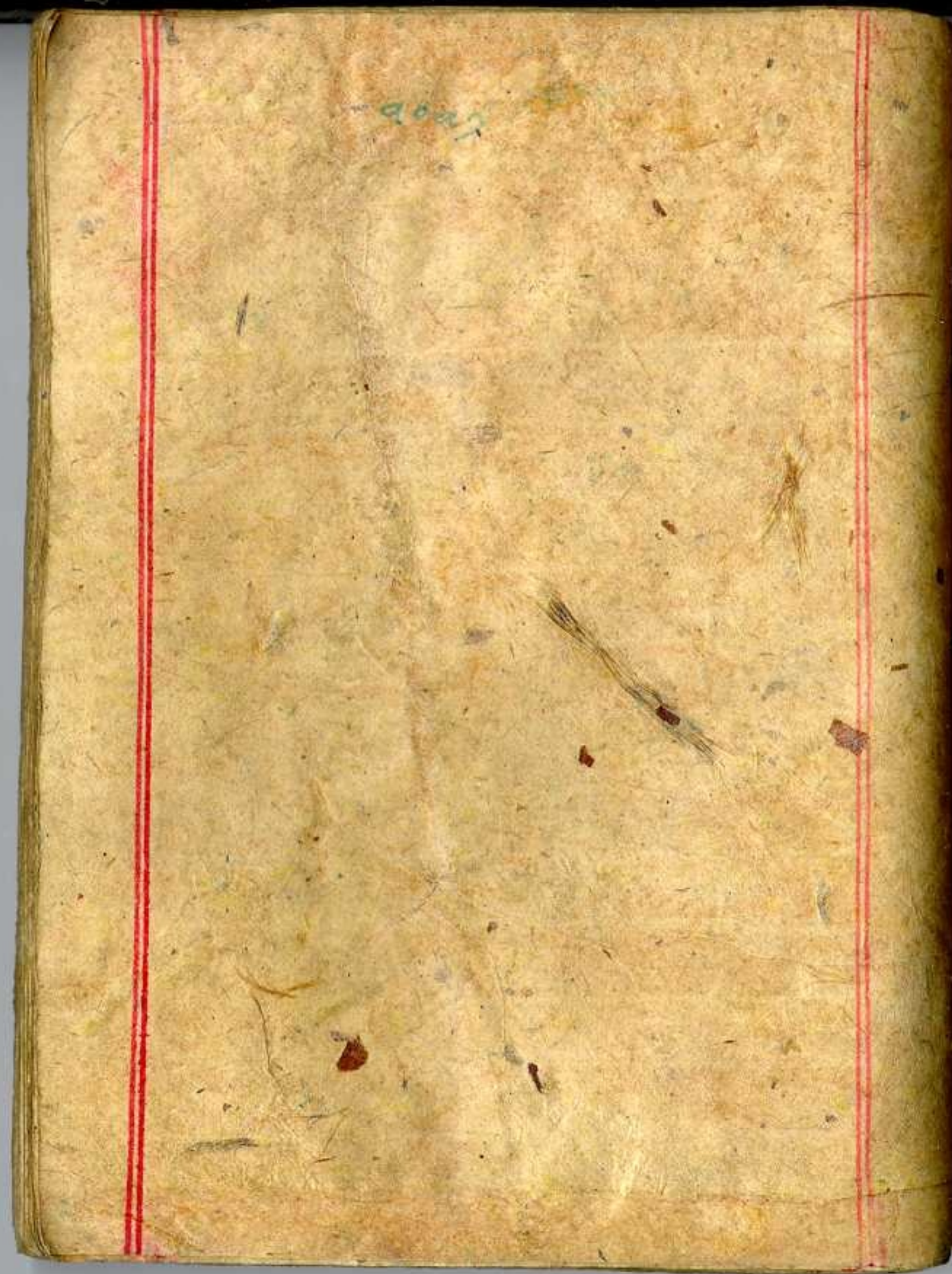






9014

9095



9022

9020

9021

9022

ਭਾਇ ਸਾਖੀ ਹੋਇਆ ਭੇ ਮਧ ਮੇਲ

ਜਗਾ ਪੁਨਰੁ ਪ੍ਰਾਨੀ ਜੁਗੁ ਅਭਾਨੀ

ਪਦ੍ਮ ਪਾ ਦਭਾਨਾ ਕਲਾਹੀ ਲੀਤੁ

ਕਹੇ ਕੁਜੀਤੁ ਜਨੇਵ ਪਦਮ ਕੋ ਪਾਈ

ਘੋਇ ਮਧਰ ਲੋਟੇ ਮਗਨ ਪੇਦੁਲ

ਭਾਇ ਮਧਰੁ ਕਤਾ ਪਨ ਲੁ ਪਾਤੁ ਕੁਲੀ

ਭਾ ਬੁਝੇ ਪਾਤੁ ਪਾਰੁ ਜੀਤੁ

ਜੁਗੁ ਕਥਾ ਪਾਤੁ ਕੋ ਮਨਾ ਕੋ ਜਾਨੀ

ਪ੍ਰੇਮ ਪਾਤੁ ਕਹੀ ਪਾਤੁ ਕੋ ਮਨ ਮੀਤੁ

ਭਾਇ ਕਥਾ ਕਹੀ ਪਾਤੁ ਕੋ ਮਨ ਮੀਤੁ

ਕੀਯੋ ਪ੍ਰੇਮ ਪਾਤੁ ਕੋ ਮਨ ਮੀਤੁ

ਮਨ ਮੇਲੇ ਪਾਤੁ ਮੇਲੇ ਕਥਾ ਕੋ ਮੇਲੇ

पहिला को ही सा पामा
परत आये को मोहर

— ६३१ — मालिनी छंद बोना

अनी लग्न स्व संसारे रमते मयल वनेनु
सुखापानि भुवनस वास कोपे औपनु
भवपानु भुव नले रस पाप मयल
वर धन कुके मत अनै पागु लु मने
नदी सुखी ह्या नाचो धे दिन रात मनोनु
काल पास होन वेंनु हला चाला दु पाप
फस जागु मन सीधे धस रीरु फधी
पर धन कुके मत अस पागु लुकोनी

जयदेवालय

1551 I